शमशेर बहादुर सिंहः

डॉ. राजू कुमार (हिन्दी विभाग)
श्री अग्रसेन महाविद्यालय,
डालखोला, प.बं., 733201

द्वितीय वर्ष

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 4 जनवरी,1911 ई. वी. को देहरादून में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा इन्होंने गोंडा और देहरादून में ही प्राप्त किया। इनकी उच्च शिक्षा क्रमशः प्रयाग और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्पन्न हुई। साहित्यिक जीवन का आरम्भ इन्होंने इलाहाबाद से ही किया। पहले-पहल उनका सम्पर्क पंत, महादेवी और निराला से हुआ। इसके बाद वे केदारनाथ अग्रवाल, अज्ञेय, रामविलाश शर्मा और अमृतराय के सम्पर्क में आएं। हिन्दी-उर्दू शब्दकोश का सम्पादन इन्होंने अपने दिल्ली अधिवास काल में ही किया। सन 1948-1954 ई.वी. तक माया प्रेस में सहायक सम्पादक रहें। वे 'दूसरा सप्तक' (1951) के कवि थे और साथ ही मार्क्सवाद के समर्थक भी रहें।

शमशेर बहादुर सिंह सौन्दर्य बोध के कवि होने के साथ ही उनके अधिकांश कविताओं में कुण्ठित प्रेम के स्वर गुंजते हैं। चित्रात्मकता और शब्द-संगीत उनके काव्य-शिल्प में प्रमुख हैं। अतिशय व्यक्तिवादिता उनकी कविता का प्रमुख स्वर है। उनकी रचनाएँ जनमानस के लिए बोधगम्य नहीं हैं। उनके सहज बोधगम्य न होने का कारण है उनकी अंतर्मुखिता। फिर भी उनकी कोई भी कविता ऐसी नहीं है जो पाठक को उनके मन्तव्य तक न पहुँचाए। एक प्रकार का अधूरापन, खुलापन, अंतहीनता के कारण उनकी कविता गूढ़ हो जाती है। आधुनिक कविता में अज्ञेय और शमशेर का कृतित्व दो भिन्न दिशाओं का परिचायक है-'अज्ञेय' की कविता में वस्तु और रूपाकार दोनों के बीच संतुलन स्थापित रखने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। शमशेर में शिल्प-कौशल के प्रति अतिरिक्त जागरुकता है। इस दृष्टि से 'अज्ञेय' और शमशेर क्रमशः दो आधुनिक अंग्रेज कवियों एजरा पाउण्ड और इलियट के अधिक निकट हैं। आधुनिक अंग्रेजी काव्य में शिल्प को प्राधान्य देने का श्रेय एजरा पाउण्ड को प्राप्त है। वस्तु की अपेक्षा रूपविधान के प्रति उनमें अधिक सजगता दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक अंग्रेजी-काव्य में काव्य-शैली के नये प्रयोग एजरा पाउण्ड से प्रारम्भ होते हैं। शमशेर बहादुर सिंह ने अपने वक्तव्य में एजरा पाउण्ड के प्रभाव को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है- 'टेकनीक में एजरा पाउण्ड शायद मेरा सबसे बड़ा आदर्श बन गया'।

शमशेर बहादुर सिंह में अपने बिम्ब, उपमानों और संगीत ध्वनियों द्वारा चमत्कार और वैचित्र्यपूर्ण आघात् उत्पन्न करने की चेष्टा अवश्य उपलब्ध होती है, पर किसी केन्द्रगामी विचार-तत्व का उनमें प्रायः अभाव-सा है। अभिव्यक्ति की वक्रता द्वारा वर्ण-विग्रह और वर्ण-संधि के आधार पर नयी शब्द-योजना

के प्रयोग से चामत्कारिक आघात देंने की प्रवृत्ति इनमें किसी ठोस विचार तत्व की अपेक्षा अधिक महत्व रखती है। शमशेर बहादुर सिंह में मुक्त साहचर्य और असम्बद्धताजन्य दुरूहता के तत्व साफ नजर आते हैं। उनकी अभिव्यक्ति में अधूरापन परिलक्षित होता है। हम कह सकते हैं कि शमशेर की कविता में उलझनभरी संवेदनशीलता अधिक है। उनमें शब्द-मोह, शब्द-खिलबाड़ के प्रति अधिक जागरूकता है और शब्द-योजना के माध्यम से संगीत-ध्वनि उत्पन्न करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

शमशेर की कविताएँ आधुनिक काव्य-बोध के अधिक निकट हैं, जहाँ पाठक तथा श्रोता के सहयोग की स्थिति को स्वीकार किया जाता है। उनका बिम्बविधान एकदम जकड़ा हुआ 'रेडीमेड' नहीं है। वह 'सामाजिक' के आस्वादन को पूरी छूट देता है। इस दृष्टि से उनमें अभूर्तन की प्रवृत्ति अपने काफि शुद्ध रूप में दिखाई देती है। उर्दु की गजल से प्रभावित होने पर भी उन्होंने काव्य-शिल्प के नवीनतम रूपों को अपनाया है। प्रयोगवाद और नयी कविता के पुरस्कर्ताओं में वे अग्रणी हैं। उनकी रचना प्रकृति हिन्दी में अप्रतिम है और अनेक सम्भावनाओं से युक्त है। हिन्दी के नये कवियों में उनका नाम प्रथम पांक्तेय है। 'अज्ञेय' के साथ शमशेर ने हिन्दी-कविता में रचना-पद्धति की नयी दिशाओं कोउद्घाटित किया है और छायावादोत्तर काव्य को एक गति प्रदान की है।

कृतियाँ- 'दोआब' (निबन्ध), 'प्लाट का मोर्चा' (कहानियाँ स्केच), 'कामिनी', 'हुश्शु और पी कहाँ' (सरशार के अनुवाद)।

शमशेर बहादुर सिंह के प्रमुख काव्य-संग्रह-

1. 'कुछ कविताएँ' (काव्य-संग्रह1959), 2.'कुछ और कविताएँ' (1961) 3. चुका भी हूँ नहीं मैं (1975), 4. इतने अपने पास (1980), 5. उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), 6. बात बोलेगी (1981), 7. काल तुमसे होड़ है मेरी (1988), 8. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995), 9. सुकून की तलाश (1998)।

शमशेर की कविताओं के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण कथन-

<u>विद्वान</u> **<u>कथन</u>**

अज्ञेय- "शमशेर कवियों का कवि हैं।"

मलयज- "शमशेर 'मूड्स' के कवि हैं किसी विजन के नहीं।"

मुक्तिबोध- "शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया है। उस भवन में जाने से डर लगता है- उसकी गम्भीर प्रयत्न साध्य पवित्रता के कारण।"

मुक्तिबोध- "शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इंप्रेशनिस्टिक चित्रकार की है।"

मुक्तिबोध- "प्रणय जीवन का प्रसंगबद्ध रसवादी कवि।"

विष्णु खरे- "शमशेर की शमशेरियत।"

रामचन्द्र तिवारी- "शमशेर का गद्य हिन्दी का जातीय गद्य है।"

रामस्वरूप चतुर्वेदी- "भाषा में बोलचाल के गद्य का लहजा, और लय में संगीत का चरम अमूर्त्तन इन दो परस्पर प्रतिरोधी मनःस्थितियों को उनकी कला साधती है।"

शमशेर बहादुर सिंह ने लिखा है- 'टेकनीक में एजरा पाउण्ड शायद मेरा सबसे बड़ा आदर्श बन गया था'।

शमशेर का कथन है- "मैं उर्दू और हिन्दी का दोआब हूँ"।

शमशेर बहादुर सिंह की चर्चित कविताएँ- 1. टूटी हुई बिखरी हुई, 2. अमन का राग (लम्बी कविता), 3. एक पीली शाम, 4. धूप कठोरी के आईने में खड़ी, 5. घिर गया है समय का रथ, 6. समय साम्यवादी।

शमशेर बहादुर सिंह की महत्तपूर्ण काव्य पंक्तियाँ-

1. चूका भी हूँ मैं नहीं
   कहाँ किया मैंने प्रेम अभी
   जब करूँगा प्रेम पिघल उठेंगे
   युगों के भूधर
   उफन उठेंगे सात सागर
   किन्तु मैं हूँ मौन आज।
2. एक पीली शाम
   पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता
   अब गिरा अब गिरा वह अटका हुआ आसूँ
   संध्या-तारक-सा
   अतल में।
3. बात बोलेगी
   हम नहीं
   भेद खोलेगी
   बात ही।
4. घिर गया है समय का रथ कहीं।
   लालिता से मढ़ गया है राग।

भावना की तुंग लहरें
पंथ अपना अन्त अपना जान
रोलती हैं मुक्ति के उद्गार।

5. हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो
जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं..
जिनमें वह फँसने नहीं आतीं,
जैसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं
जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पातीं,
तुम मुझसे प्रेम करो
जैसे मैं तुमसे करता हूँ।

<u>सुभद्रा कुमारी चौहान</u>

डॉ. राजू कुमार (हिन्दी विभाग)
श्री अग्रसेन महाविद्यालय,
डालखोला, प.बं., 733201

<u>द्वितीय वर्ष</u>

जन्म सन् 1904 ई. (संवत् 1961वि.) में प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। आपका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। क्रास्थवेट गलर्स कॉलेज में आपने शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा समाप्त करने के बाद नवल पुर के सुप्रसिद्ध वकील ठाकुर लक्षण सिंह के साथ आपका विवाह हो गया। बाल्यकाल से ही साहित्य में रुचि थी। प्रथम काव्य रचना आपने 15 वर्ष की आयु में ही लिखी थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रहीं। कई बार जेल गयीं। काफी दिनों तक मध्य प्रान्त असेम्बली की क्रांग्रेज सदस्या रहीं और साहित्य एवं राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक जागरुक नारी के रूप में अपना कर्तव्य निभाती रहीं। 1948 ई. में अप्रैल के महीने में आपका स्वर्गवास हो गया।

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान मुख्यतः कवयित्री थीं। उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियाँ विशेषरूप से महत्व रखती हैं- पहली तो राष्ट्रीय भावना की और दुसरी घरेलु जीवन की। आपकी राष्ट्रीय कविताओं में समसामयिक देश-प्रेम और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप है। सुभद्रा जी ने अपनी राष्ट्रीय रचनाओं में जिस प्रतिभा के साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय भावनाओं को समसामयिक राजनीतिक जीवन के तात्कालिक संदर्भों से जोड़ा था, उससे उनकी प्रतीभा का विशेष परिचय मिलता है। सुभद्रा जी की काव्य-शैली की विशेषता यह थी कि वह किसी भी जटिल से जटिल भाव को सम्पूर्ण सरलता के साथ रखती थीं। भाव और अभिव्यक्ति, दोनों को एक दूसरे में ऐसा पिरोकर रखती थीं कि कहीं भी उनकी शैली में राष्ट्रीय भावना आरोप के समान नहीं लगता। बुन्देलखण्ड में लोक-शैली में गाये जाने वाले छन्द को लेकर उसी में झाँसी की रानी जैसी रोमांचक कथा लिखना उनकी प्रतीभा और दृष्टि दोनों का परिचय देता है। यही कारण था कि राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों में यद्यपि "झाँसी की रानी" काव्य को अंग्रेजी सरकार ने ज़ब्त कर लिया था फिर भी वह हिन्दी भाषाभाषी जनता को कण्ठाग्र हो गया था। "बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी"- 'झासी की रानी' काव्य इन पंक्तियों ने देश में राष्ट्रीयता का जागरण किया और युवकों को काफी प्रेरणा दी। यह सरलता उनके घरेलु या सहज जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली रचनाओं में भी मिलती है।

"वीणा बज सी पड़ी खुल गये नेत्र और कुल आया ध्यान, मुड़ने की थी देर मिल गया, उत्सव का प्यारा सामान" या "मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी" या "शैशव के सुन्दर प्रभात का मैंने नव विकास देखा, यौवन की मादक लाली में यौवन का हुलास देखा" आदि कविताओं में हमें यह स्पष्ट पता चलता है कि सुभद्राजी में गम्भीर से गम्भीर विषय को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने की अदम्य क्षमता थी। लेकिन इस सरलता में सुभद्राजी की रचनाएँ अपनी सरसता नहीं खोतीं। भावव्यंजक सरलता और हृदयस्पर्शी सरसता दोनों के योग से वह अपनी रचनाओं को बड़ा मधुर बना देती थीं। उनकी कविताओं के संकलन '**त्रिधारा**' और '**मुकुल**' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं।

काव्य के अतिरिक्त श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की दूसरी साहित्यिक विधा कहानी थी। कहानीयों में भी वही सरल शैली और जीवन के मधुरतम भावुक क्षणों का मानवीय चित्रण इनकी विशेषता थी। राष्ट्रीय भावनाएँ और आदर्श और यथार्थ के मर्मस्पर्शी संघर्षों पर आधारित कहानियाँ समसामयिक राष्ट्र की मानसिक स्थिति का पूर्ण परिचय देती हैं। सुभद्राजी की कविताओं और कहानियों में उस युग की छायावादी प्रवृत्ति की बड़ी निर्मल झाँकी देखने को मिलती है। वही स्वप्नलोक, वही आदर्शवाद, वही उदात्त भाव आधारभूत रूप में आपकी रचनाओं में वैसे ही वर्तमान है किन्तु उनका सह-सम्बन्ध सुभद्राजी ने राष्ट्रीय और सहज जीवन के पक्षों से स्थापित किया है। उस छायावादी वातावरण से समसामयिक ऐतिहासिक दायित्व के लिए इतना भी निकाल लेना सुभद्राजी की प्रतिभा और सतर्क बुद्धि का परिचायक है। कहानियों को पढ़ने से यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। आपकी कहानियों पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से दो बार '**सेक्सरिया**' पुरस्कार मिला था। आपकी कहानियों के संग्रहों का नाम है- '**बिखरे मोती**' और '**उन्मादिनी**'।

कहानियों के अतिरिक्त सुभद्राजी ने अच्छे निबन्ध भी लिखे हैं। निबन्धों में भी आपने व्यक्तिगत शैली में ही अनेक प्रश्नों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है। वस्तुतः सुभद्राजी का व्यक्तित्व इतना व्यक्तिगत था कि उसकी छाप जैसे उनके काव्य पर है, कहानियों पर है, ठीक उसी प्रकार निबन्धों पर भी है। निबन्धों का वैसे कोई स्वतंत्र महत्व नहीं है। किन्तु उनकी समस्त कृतियों की सापेक्षता में उनकी संगति है। उन निबन्धों को पढ़ने से उनकी संगति रचना-प्रक्रिया और सोचने के ढंग का परिचय मिलता है, साथ ही उनकी मौलिक वृत्तियों को समझने का परिप्रेक्ष्य स्पष्ट हो जाता है।

शैलीकार के रूप में सुभद्राजी की शैली में सरलता विशेष गुण है। भाषा भी रोज के बोलचाल की और उसके साथ उनका शिल्प भी अत्यन्त सहज और सुलभ पक्षों का समर्थन करता हुआ चलता है। नारी हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव-पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना सुभद्राजी की शैली का मुख्य आधार है। शिल्प के लिए इनकी रचनाओं में आरोपित आग्रह कहीं भी नहीं मिलता। यद्यपि इनका गद्य भी इसी प्रकार सरल और आसानी से समझने योग्य है।